بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 25
Issue - 09

राह-ए-ईमान

सितंबर
2023 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब).....4
5. सम्पादकीय 6
6. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना 7
7. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 25.8.2023).....8
8. (हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब अलैहिस्सलाम का मक़ाम और मर्तबा....12
9. अरबईन नम्बर-2.....21
10. हुज़ूर अनवर से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर.....27
11. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें.....32

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
नूरुद्दीन नूरी
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

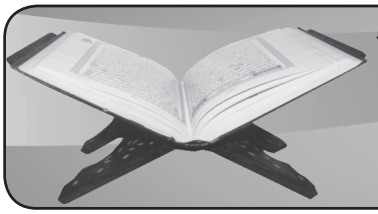

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۖ اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵﴾
اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ سَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ هُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ

अनुवाद:- 15-अत: आज के दिन की भेंट को भूल जाने के कारण और अपने कर्मों के कारण चिरकाल तक रहने वाले अज़ाब का मज़ा चखो और (याद रखो कि) हम ने भी (आज) तुम्हें भुला दिया है (अर्थात् हमें तुम्हारी परवाह नहीं)। 16-हमारी आयतों पर तो वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उन्हें उन के सम्बन्ध में याद कराया जाता है तो वे सजद: करते हुए धरती पर गिर जाते हैं और अपने रब्ब की स्तुति और महिमा करते हैं तथा अहंकार नहीं करते। (सूरह अस्सजदह - 15,16)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत जाबिर बिन असवद या असवद बिन जाबिर बताते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में दो आदमी यह समझते हुए कि मस्जिद में नमाज़ जमाअत के साथ हो चुकी होगी घर में नमाज़ पढ़ी और फिर मस्जिद में आए और देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ा रहे हैं वे नमाज़ में शामिल होने के बजाय एक तरफ होकर बैठ गए कि एक बार तो वह नमाज़ पढ़ चुके हैं फिर दोबारा वही नमाज़ पढ़ना सही नहीं। जब हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने सलाम फेरने के बाद उन्हें देखा कि वह नमाज़ में शामिल नहीं हुए हैं तो वे दोनों डर के मारे कांपते हुए आए कि शायद उनसे कोई गुनाह हो गया है। हुज़ूर ने उनसे नमाज़ न पढ़ने की वजह पूछी। उन्होंने जब घटना बताई तो आपने फरमाया: जब तुम अकेले नमाज़ पढ़ चुके हो तो फिर जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ लिया करो चाहे तुम पहले अदा की गई नमाज़ को ही फर्ज़ समझते हो।

(मसनद अल्इमाम अल्आज़म किताबुस्सलात पृष्ठ 82)

★ ★ ★

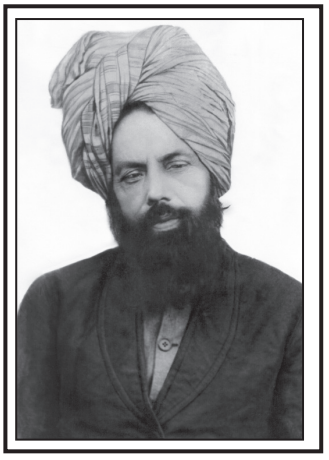

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

अपनी जमाअत के लिए एक बहुत ज़रूरी नसीहत

आज कल ज़माना ख़राब हो रहा है भांत-भांत के शिर्क, बिदअत और ख़राबियाँ उत्पन्न हो गई हैं। बैअत के समय जो इक़रार किया गया है कि दीन को दुनिया पर प्राथमिकता दूँगा। यह इक़रार ख़ुदा के सामने इक़रार है। चाहिए कि इस पर मौत तक दृढ़ता से स्थापित रहो अन्यथा समझो कि बैअत नहीं की और यदि स्थापित रहोगे तो अल्लाह तआला दीन, दुनिया में बरकत देगा। अपने अल्लाह की इच्छा के अनुसार पूर्ण संयम धारण करो।

युग संवेदनशील है। अल्लाह का क्रोध प्रकट हो रहा है जो अल्लाह की इच्छानुसार अपने आप को बना लेगा। वह अपनी जान और परिवार पर दया करेगा। देखो मनुष्य रोटी खाता है जब तक तृप्त होने तक पूरा भोजन न खा ले तो उसकी भूख नहीं जाती। यदि वह एकरोटी का लुक़मा खा ले तो क्या वह भूख से मुक्ति पाएगा? कदापि नहीं। यदि वह पानी की एक बूंद अपने गले में डाले तो वह बूंद उसे कदापि बचा नहीं सकेगी अपितु उस बूंद के बावजूद वह मरेगा। प्राणों की रक्षा के लिए सतर्क रहते हुए जिस से जीवित रहा जा सकता है, जब तक खा न ले और पी न ले नहीं बच सकता। यही अवस्था मनुष्य की दीनदारी की है जब तक उसकी दीनदारी उस सीमा तक न हो कि तृप्त हो जाए, तो बच नहीं सकता। दीनदारी, संयम, ख़ुदा के आदेशों की पालना को इस सीमा तक करना चाहिए जैसे रोटी और पानी को इस सीमा तक खाते और पीते हैं जिस से भूख और प्यास चली जाती है।

भलि प्रकार से याद रखना चाहिए कि ख़ुदा की कुछ बातों को न मानना उस की सब बातों को ही छोड़ देना है यदि एक भाग शैतान का हो और एक ख़ुदा का तो ख़ुदा कहता है कि सब ही शैतान का है। अल्लाह तआला भागीदारी को पसंद नहीं करता। यह सिलसिला उस का इसी लिए है कि इन्सान अल्लाह तआला की तरफ़ आए। यद्यपि ख़ुदा की तरफ़ आना बहुत मुश्किल होता है और एक किस्म की मौत है परंतु आख़िर ज़िंदगी भी इसी में है। जो अपने अंदर से शैतानी हिस्सा निकाल कर बाहर फेंक देता है वह मुबारक इन्सान होता है और उस के घर और दिल और शहर सब जगह उस की बरकत पहुँचती है। लेकिन यदि उस के हिस्सा में ही थोड़ा आया है तो वह बरकत न होगी जब तक बैअत का इक़रार व्यवहारिक रूप से न हो बैअत कुछ चीज़ नहीं है। जिस तरह से एक इन्सान के आगे तुम बहुत सी बातें ज़बान से करो परंतु व्यवहारिक रूप से कुछ भी न करो तो वह ख़ुश न होगा। इसी प्रकार ख़ुदा के बारे में है वह स्वाभिमानों से अधिक स्वाभिमानी है क्या यह हो सकता है कि एक तो तुम उस का आज्ञापालन करो फिर इधर उस के दुश्मनों की भी मानो। इस का नाम तो निफ़ाक़ (अर्थात कपट) है। इन्सान को चाहिए कि इस चरण में किसी ज़ैद और बकर की परवाह न करे। मरते दम तक इस पर स्थापित रहे।

★ ★ ★

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-4)

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

तीसरे प्रश्न का उत्तर...

अब ईसाई साहिबान कृपा कर के बताएं कि भौतिक शास्त्र की दृष्टि से उस अद्भुत सितारे का क्या नाम है जो मजूसियों के क़दम से क़दम मिलाकर उनके साथ-साथ चला था और यह किस प्रकार की हरकत और किन नियमों की दृष्टि से मान्य सबूत है? मुझे मालूम नहीं कि इन्जील मती ऐसे सितारे के बारे में भौतिक शास्त्र वालों से कैसे पीछा छुड़ा सकती है। कुछ लोग तंग आकर यह उत्तर देते हैं कि यह मसीह का कथन नहीं मती का कथन है। मती के कथन को हम इल्हामी नहीं जानते। यह अच्छा उत्तर है जिससे इन्जील के इल्हामी होने की भली-भांति कलई खुल गई और मैं बतौर कमी करते हुए कहता हूँ कि कि जैसे मसीह का कथन नहीं मती या किसी अन्य का कथन है परन्तु मसीह का कथन भी तो (जिसको इल्हामी माना गया है और जिस पर अभी हमारी ओर से आपत्ति हो चुकी है) उसी का समरंग और समरूप है थोड़ा उसी को भौतिकी के नियम से अनुकूल कर के दिखालाइए तथा यह भी याद रहे कि यह कथन इल्हामी नही अपितु मनुष्य की ओर से इन्जील में मिलाया गया है तो फिर आप लोग उन इन्जीलों को जो आप के हाथ में हैं समस्त वर्णनों की दृष्टि से इल्हामी क्यों कहते हो? स्पष्ट तौर पर क्यों मशहूर नहीं कर देते कि उन कुछ बातों के अतिरिक्त जो हज़रत मसीह के मुंह से निकलीं हैं शेष जो कुछ इन्जीलों में लिखा है वह लेखकों ने केवल अपने विचार, अपनी बुद्धि तथा विवेक के अनुसार लिखा है, जो गलतियों से पवित्र नहीं समझा जा सकता। जैसा कि पादरी लोगों के सामान्य लेखों से मुझे मालूम हुआ है कि यह राय सामान्य तौर पर मशहूर ही की गई है अर्थात् इन्जीलों की पूर्ण सहमति के बारे में यह स्वीकार कर लिया गया है कि जो कुछ ऐतिहासिक तौर पर चमत्कारों इत्यादि का वर्णन उनमें पाया जाता है वह कोई इल्हामी बात नहीं अपितु इन्जील के लेखकों ने अपने अनुमान या सुनने इत्यादि बाह्य साधनों से लिख दिया है। तो पादरी सज्जनों ने इस इक़रार से उन बहुत से आक्रमणों से जो इन्जीलों पर होते हैं अपना पीछा छुड़ाना चाहा है और प्रत्येक इंजील में लगभग दस भाग मनुष्य का कलाम और एक भाग ख़ुदा तआला का कलाम मान लिया है और इन इक़रारों के कारण जो-जो हानि उन्हें उठानी पड़ीं उनमें से एक यह भी है कि ईसवी चमत्कार उनके हाथ से गए और उनके पास उनका कोई सन्तोषजनक और पर्याप्त सबूत न रहा, क्योंकि यद्यपि इन्जील के लेखकों ने ऐतिहासिक तौर पर केवल अपनी ओर से मसीह के चमत्कार इन्जीलों में लिखे हैं परन्तु मसीह का अपना शुद्ध वर्णन जो इल्हामी कहलाता है हवारियों के वर्णन से सर्वथा विपरीत और विरुद्ध मालूम होता है। अपितु उसका उल्टा और विपरीत है। कारण यह कि मसीह ने अपने वर्णन में जिसको इल्हामी कहा जाता है जगह-जगह चमत्कारों के दिखाने से इन्कार ही किया है और चमत्कारों के मांगने वालों को साफ़

उत्तर दे दिया है कि तुम्हें कोई चमत्कार नहीं दिखाया जाएगा। अत: हीरोदेस ने भी मसीह से चमत्कार माँगा तो उसने न दिखाया और बहुत से लोगों ने उसके निशान देखने चाहे और निशानों के बारे में उस से प्रश्न भी किया परन्तु वह साफ़ इन्कारी हो गया और कोई निशान दिखा न सका अपितु उसने पूरी रात जाग कर ख़ुदा तआला से यह निशान माँगा कि वह यहूदियों के हाथ से सुरक्षित रहे तो यह निशान भी उसको न मिला और दुआ अस्वीकार की गई। फिर मस्लूब होने के बाद यहूदियों ने सच्चे दिल से कहा कि यदि अब वह सलीब पर से ज़िन्दा होकर उतर आए तो हम सब के सब उस पर ईमान ले आएँगे परन्तु वह उतर ही न सका। अत: इन समस्त घटनाओं से साफ़ प्रकट है कि जहाँ तक इन्जीलों में इल्हामी वाक्य हैं वे मसीह को साहिब-ए-चमत्कार होने से स्पष्ट इन्कार कर रहे हैं और यदि कोई ऐसा वाक्य भी है कि जिसमें मसीह के साहिब-ए-चमत्कार होने के बारे में कुछ विचार कर सकें तो वास्तव में वह वाक्य बहुमुखी है जिसके और और मायने भी हो सकते हैं। कुछ आवश्यक मालूम नहीं होता कि उसको प्रत्यक्ष पर ही चरितार्थ किया जाए या अकारण खींच-तान कर के उन चमत्कारों का ही चरितार्थ ठहराया जाए जिनका इंजील के लेखकों ने अपनी ओर से वर्णन किया है तथा कोई विशेष वाक्य हज़रत मसीह के मूँह से निकला हुआ ऐसा नहीं कि जो गहतना और चमत्कारों के सबूत पर स्पष्ट तौर पर सिद्ध करता हो अपितु मसीह के विशेष और ज़ोरदार वाक्यों का इसी बात पर तर्क पाया जाता है कि उनसे एक भी चमत्कार प्रकटन में नहीं आया[1] ★ आश्चर्य कि ईसाई लोग क्यों उन बातों पर भरोसा और विश्वास नहीं करते जो मसीह का विशेष वर्णन और इल्हामी कहलाती हैं और विशेष तौर पर मसीह के मुंह से निकली हैं? दूसरी बातों पर क्यों विश्वास किया जाता है और क्यों उनके महत्त्व से अधिक उन पर बल दिया जाता है जो ईसाइयों के अपने इक़रार के अनुसार इल्हामी नहीं हैं अपितु ऐतिहासिक तौर पर इन्जीलों में दाखिल हैं और इल्हाम के सिलसिले से पूर्णतया बाहर हैं तथा इल्हामी इबारतों से उनका पूर्णतया विरोधाभास पाया जाता है। तो जब इल्हामी और ग़ैर इल्हामी इबारतों में विरोधाभास हो तो उसे दूर करने के लिए इसके अतिरिक्त और क्या उपाय है कि जो इबारतें इल्हामी नहीं हैं वे अविश्वसनीय समझी जाएँ और केवल इन्जील के लेखकों की अतिशयोक्तियों पर विश्वास न किए जाएँ? अत: जगह-जगह उनकी अतिशयोक्ति करना प्रकट भी है जैसा की युहन्ना की इन्जील की अंतिम आयत जिस पर वह पवित्र इंजील समाप्त की गई है यह है – "पर और भी बहुत से काम हैं जो यसू ने किए और यदि वे पृथक-पृथक लिखे जाते तो मैं गुमान करता हूँ कि किताबें जो लिखीं जातीं दुनिया में न समा सकतीं।" देखो कितनी अतिशयोक्ति है कि पृथ्वी और आकाश के चमत्कार तो दुनिया में समा गए परन्तु मसीह का तीन या ढाई वर्ष का जीवन चरित्र दुनिया में समा नहीं सकता ऐसे अतिशयोक्ति करने वाले लोगों की रिवायत पर क्योंकर विश्वास कर लिया जाए। (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ 55-58)

☆ ☆ ☆

★**हाशिया :-** पवित्र क़ुर्आन में केवल उस मसीह के चमत्कारों का सत्यापन है जिसने कभी ख़ुदाई का दावा नहीं किया क्योंकि मसीह कई हुए हैं और होंगे और फिर क़ुर्आनी सत्यापन बहुमुखी हैं जो इंजील के लेखकों के वर्णन का कदापि सत्यापन कर्ता नहीं। इसी से।

सम्पादकीय

ग़ीबत करना (अर्थात चुगली करना)

आजकल हमारे माहौल में ग़ीबत या चुगली करना एक सामान्य सी बात हो गई है लेकिन यह बहुत फिक्र वाली बात है। जब भी चुगली होती है तो यह डर रहता है कि यह बात बिना सोचे-समझे लोगों में फैल जाएगी। इस संबंध में, अल्लाह तआला क़ुरान में फरमाता है: आयत का अनुवाद: ऐ ईमान वालो! यदि कोई दुष्ट तुम्हारे पास कोई समाचार लाए, तो उसकी जांच करो, ऐसा न हो कि तुम अज्ञानता के कारण किसी क़ौम को हानि पहुंचाओ, और फिर तुम्हें अपने किए पर पछताना पड़े। (अल-हुजरात: 7)

एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा से पूछा, "क्या आप जानते हैं कि चुगली क्या है?" सहाबा ने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल ही बेहतर जानते हैं। फरमाया: तुम अपने भाई का ज़िक्र इस तरह करो जो उसे पसंद न हो। पूछा गया कि अगर मैंने जो कहा है वह बात मेरे भाई में मौजूद हो तो? हुज़ूर ने फरमाया, "यदि जो कुछ तू ने कहा है वह तेरे भाई में मौजूद है, तो तू ने उसकी चुगली की है; यदि नहीं है, तो तू ने उस पर आरोप लगाया है।" (सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्र वस्सलात)

इसी तरह, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "जो कोई अपने (धार्मिक) भाइयों में से किसी की निंदा करता है और उसकी रक्षा नहीं करता है और उसकी मदद नहीं करता है, हालांकि वह उसकी मदद कर सकता था, तो इसका पाप इस दुनिया में उस पर होगा और आख़िरत में भी।" हज़रत उक़बा कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि मोक्ष कैसे प्राप्त किया जाए। उन्होंने कहा: अपनी जीभ पर काबू रखो, अपना घर तुम्हारे लिए काफी हो (अर्थात लालच से दूर रहो)। अगर कोई गलती हो जाए तो तौबा करो और अल्लाह तआला के सामने रोओ और माफी मांगो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: "ऐसी जमात, जमात नहीं हो सकती जो एक-दूसरे को खाए और जब उनमें से चार लोग एक साथ बैठें, तो उनमें से अपने एक गरीब भाई की निंदा करें और कमजोरों और गरीबों की आलोचना और तिरस्कार करें।" (मलफ़ूज़ात जिल्द 2 पृष्ठ 264)
फरमाया: कुछ पाप इतने सूक्ष्म होते हैं कि व्यक्ति उनमें लिप्त होता है और समझ नहीं पाता। जवानी से लेकर बूढ़े होने तक उसे पता नहीं चलता कि वह पाप करता है। जैसे चुगली करने की आदत होती है। ऐसे लोग इसे मामूली और छोटी बात समझते हैं; हालाँकि पवित्र क़ुरान ने इसे बहुत बड़ा बताया है। जैसा कि फरमाया: "क्या तुम में से कोई पसंद करेगा कि वह अपने मुर्दा भाई का मांस खाए।" (अल-हुजुरात- 13)

अल्लाह उस समय नाराज़ होता है जब कोई व्यक्ति कोई ऐसा शब्द बोलता है जिससे उसके भाई का अपमान होता है और कोई ऐसा कार्य करता है जिससे उसे नुकसान पहुंचता है। किसी भाई के बारे में ऐसा बयान देना जो उसे अज्ञानी और मूर्ख दिखाता हो, या गुप्त रूप से उसकी आदतों के प्रति अनादरपूर्ण या शत्रुतापूर्ण हो। ये सब बुरे कर्म हैं। उसे जो भी कमज़ोर लगे उसे गुप्त सलाह दे यदि वह नहीं मानता है, तो उसके लिए दुआ करे। (मलफ़ूज़ात जिल्द 4) अल्लाह हम सबको इस चुगली जैसी बुराई से बचाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना

महासिन-ए-क़ुरआन-ए-करीम

ऐ सोने वालो ! जागो कि वक्ते बहार है
अब देखो आ के दर पे हमारे वो यार है
क्या ज़िन्दगी का ज़ौक[1] अगर वो नहीं मिला !
लानत है ऐसे जीने पे गर उस से हैं जुदा
उस रुख़ को देखना ही तो है असल मुद्दआ[2]
जन्नत भी है यही कि मिले यार आशना
ऐ हुब्बे जाह[3] वालो ! यह रहने की जा[4] नहीं
इस में तो पहले लोगों से कोई रहा नहीं
देखो तो जा के उन के मकाबिर[5] को इक नज़र
सोचो कि अब सल्फ[6] हैं तुम्हारे गए किधर
इक दिन वही मक़ाम[7] तुम्हारा मक़ाम है
इक दिन यह सुब्हे ज़िन्दगी की तुम पे शाम है
इक दिन तुम्हारा लोग जनाज़ा उठाएंगे
फिर दफ़न करके घर में तअस्सुफ़[8] से आएंगे
ऐ लोगो ! ऐशे दुनिया को हरगिज़ वफ़ा नहीं
क्या तुम को ख़ौफ़े मर्ग[9] व ख़्याले फ़ना नहीं
सोचो कि बाप दादे तुम्हारे किधर गए
किस ने बुला लिया वो सभी क्यों गुज़र गए
वो दिन भी एक दिन तुम्हें यारो नसीब है
ख़ुश मत रहो कि कूच की नौबत[10] क़रीब है
ढूँढो वो यार राह जिस से दिलो सीना पाक हो
नफ़्से[11] दनी ख़ुदा की इताअत[12] में ख़ाक हो
मिलती नहीं अज़ीज़ो! फ़क़त किस्सों से ये राह
वो रौशनी निशानों से आती है गाह गा[13]

---

1. आनन्द। 2.वास्तविक। 3. सम्मान के इच्छुक। 4. स्थान। 5. समाधियाँ। 6. पूर्वज। 7. स्थान। 8. अफ़सोस। 9. मृत्यु। 10. समय। 11. कमीना। 12. आज्ञा पालन। 13. कभी-कभी। ऐशे दुनिया: दुनिया कि ज़िन्दगी

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 25.8.2023 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

तौबा एवं इस्तिग़फ़ार का महत्त्व

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- अल्लाह तआला अपने बन्दे के इस्तिग़फ़ार एवं तौबा को क़बूल करने वाला है किन्तु शर्त यह है कि वह सच्ची तौबा हो, केवल मुंह से शब्द ही अदा न हो रहे हों। क़ुर्आन करीम में विभिन्न स्थानों पर इसका वर्णन हुआ है कि अल्लाह तआला सच्ची तौबा क़बूल करने वालों को माल तथा औलाद प्रदान करता है तथा यह अल्लाह के प्रकोप से बचाने का एक माध्यम है।

इस्तिग़फ़ार करने वाला अल्लाह तआला की दया का पात्र बनता है। एक जगह अल्लाह तआला ने इस्तिग़फ़ार करने वालों को शुभ सूचना देते हुए फ़रमाया कि لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا वे अवश्य ही अल्लाह को अति क्षमाशील तथा बार बार दया करने वाला पाएँगे किन्तु शर्त यही है कि वास्तविक इस्तिग़फ़ार एवं सच्ची तौबा हो।

एक हदीस में हज़रत अनस रज़ी. से रिवायत है कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि पाप से सच्ची तौबा करने वाला ऐसा ही है जैसे उसने कोई गुनाह किया ही नहीं। जब अल्लाह तआला किसी इंसान से मुहब्बत करता है तो पाप उसे कोई हानि नहीं पहुंचा सकते अर्थात पाप को प्रोत्साहन देने वाली उत्सुकता उसे बदी की ओर नहीं झुका सकती तथा बदी के परिणाम से अल्लाह तआला उसे सुरक्षित रखता है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तौबा की निशानियाँ बयान करते हुए फ़रमाया कि पश्चाताप एवं पशेमानी खेद की निशानी तौबा है। अतएव वास्तविक तौबा करने वाला जहाँ गुनाहों से पाक होता है वहाँ उसे अल्लाह तआला का स्नेह भी मिलता है तथा बार बार अल्लाह तआला के रहम से हिस्सा प्राप्त करता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सच्ची तौबा की शर्तों के अंतगर्त फ़रमाते हैं कि पहली शर्त यह

है कि तामसिक विचार एवं बुरी कल्पनाओं को छोड़ दे। दूसरी शर्त यह है कि वास्तवित पश्चाताप तथा खेद प्रकट करे। तीसरी शर्त यह है कि पक्का इरादा करे कि इन बुराईयों के निकट नहीं जाएगा और यहीं रुक नहीं जाना कि बुराईयों के निकट न जाने का संकल्प कर लिया और बस काफ़ी हो गया, बल्कि शुभ नैतिकता एवं शास्वत कर्म उसकी जगह ले लें। अत: यह है वास्तविक तौबा तथा वास्तविक पश्चाताप। जब यह अवस्था प्राप्त हो जाए तो फिर ख़ुदा तआला अपने ऐसे बन्दों से प्रेम करता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस्तिग़फ़ार और तौबा की ओर हमें बार बार ध्यान दिलाते हैं। आप अलै. को इतनी चिंता थी कि कोई अवसर ऐसा नहीं आया कि जब आप अलै. ने जमाअत को इस तरफ़ ध्यान न दिलाया हो। अत: हमारे लिए यह अति आवश्यक है कि अल्लाह तआला तथा उसके रसूल के आदेश तथा निर्देशों की रौशनी में बयान करदा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों को सदैव सम्मुख रख कर उनके अनुसार कर्म करने का प्रयास करें ताकि बैअत का वास्तविक हक़ अदा करने वाले भी बनें।

यदि हम अपने भीतर पाक बदलाव पैदा न करें और वास्तविक तौबा व इस्तिग़फ़ार की ओर ध्यान न दें तो हमारा अपने सुधार का संकल्प करना हमें कोई लाभ नहीं दे सकता। आप अलै. फ़रमाते हैं कि ज़ाहिर है कि इंसान अपनी प्रकृति में अत्यंत दुर्बल है तथा ख़ुदा तआला के सैंकड़ों आदेशों का बोझ उस पर डाला गया है। अत: उसकी प्रकृति में यह दाखिल है कि वह अपनी दुर्बलता के कारण कुछ आदेशों का पालन करने से वंचित रहे तथा कभी तामसिक वृत्ति की कुछ अभिलाषाएँ उस पर क़बज़ा कर लेती हैं। अत: वह अपनी कमज़ोरी तथा प्रकृति के अनुसार अधिकार चाहता है कि किसी ग़लती के समय वह तौबा व इस्तिग़फ़ार करे तो ख़ुदा की रहमत उसको नष्ट होने से बचा ले। इस लिए यह विश्वस्त सूत्र है कि यदि ख़ुदा तौबा क़बूल करने वाला न होता तो इंसान पर सैंकड़ों आदेशों का बोझ कदाचित न डाला जाता। इससे निश्चित रूप से प्रमाणित होता है कि ख़ुदा तव्वाब एवं ग़फ़ूर है तथा तौबा का यह अर्थ है कि इंसान एक बुराई को यह स्वीकार करके छोड़ दे कि इसके बाद यदि वह आग में भी डाला जाए तब भी वह पाप कदापि न करेगा।

अतएव यह शर्त है, ऐसी तौबा होनी चाहिए। अत: जब इंसान इस सच्चाई तथा सुदृढ़ संकल्प के साथ ख़ुदा तआला की ओर पलटता है तो ख़ुदा अपनी ज़ात में करीम व रहीम है, वह उस पाप के दंड को क्षमा कर देता है और यह ख़ुदा तआला के उच्चतम गुणों में से है कि वह तौबा को क़बूल करके इंसान को विनाश होने से बचा लेता है।

कुछ लोग कहते हैं कि हमने इतनी बार इस्तिग़फ़ार किया, सौ या हज़ार बार तसबीह पढ़ी किन्तु जब इस्तिग़फ़ार का मतलब तथा अर्थ पूछो तो हक्का बक्का रह जाएँगे। इंसान को चाहिए कि वास्तविक रूप से दिल ही दिल में माफ़ी मांगता रहे कि वे पाप एवं दोष जो मेरे द्वारा घटित हो चुके हैं उनका दंड न भोगना पड़े और वे माफ़ हो जाएँ। फिर दिल ही दिल में ख़ुदा तआला से हर समय सहायता मांगता रहे कि आगे से नेक काम करने का सामर्थ्य दे तथा अनैतिक कामों से बचाए रखे। केवल शब्दों से कुछ काम नहीं बनेगा। अपनी भाषा में भी इस्तिग़फ़ार हो सकता है कि ख़ुदा तआला पिछले गुनाहों को माफ़ करे तथा

आगे के गुनाहों से सुरक्षित रखे तथा नेकी करने की तौफ़ीक दे, यही इस्तिग़्फ़ार है। ख़ुदा तक वही बात पहुंचती है जो दिल से निकलती है, ज़बान तो केवल दिल की गवाही देती है। केवल ज़बानी दुआएँ व्यर्थ हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हमारी जमाअत को चाहिए कि कोई विशेष उदाहरण भी प्रकट करे। यदि कोई व्यक्ति बैअत करके जाता है और कोई विशेष कर्म नहीं दिखाता, अपनी पत्नी के साथ वैसा ही व्यवहार है जैसा पहले था तथा अपने परिवार के साथ पहले जैसी अवस्था में ही पेश आता है तो यह अच्छी बात नहीं। यदि बैअत के बाद भी वही अनैतिकता तथा दुर्व्यवहार रहा तथा पहले जैसा ही हाल रहा तो फिर बैअत करने का क्या लाभ? चाहिए कि बैअत के बाद ग़ैरों को भी तथा अपने रिश्तेदारों एवं पड़ौसियों को भी ऐसा नमूना बन कर दिखावे कि वे बोल उठें कि अब यह वह नहीं रहा जो पहले था और यही वास्तविक इस्तिग़्फ़ार का परिणाम होना चाहिए।

कुछ मूढ़ पादरियों ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस्तिग़्फ़ार पर आपत्ति की है तथा लिखा है कि उनके इस्तिग़्फ़ार करने से नऊज़ुबिल्लाह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पापी होना साबित होता है। ये मूढ़ नहीं समझते कि इस्तिग़्फ़ार तो एक अद्‌भुत गुण है। इंसान प्राकृतिक रूप से ऐसा बना है कि कमज़ोरी एवं दुर्बलता उसके स्वभाव में है। नबी इस प्राकृतिक दुर्बलता तथा मानवीय कमज़ोरी से भली भांति परिचित होते हैं अतएव वे दुआ करते हैं कि या इलाही! तू हमारी ऐसी रक्षा कर कि वे मानवीय कमज़ोरियाँ घटित ही न हों।

कोई दावा नहीं कर सकता कि मैं अपनी शक्ति से पाप करने से बच सकता हूँ। अत: नबी भी सुरक्षा हेतु ख़ुदा के मोहताज हैं। अत: बन्दगी की अभिव्यक्ति के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी अन्य नबियों की तरह अपनी सुरक्षा ख़ुदा तआला से मांगा करते थे।

ईसाइयों का यह विचार ग़लत है कि ईसा अलैहिस्सलाम इस्तिग़्फ़ार नहीं करते थे। इंजील से स्पष्ट रूप में ज्ञात होता है कि उन्होंने जगह जगह अपनी दुर्बलताओं को स्वीकार किया तथा इस्तिग़्फ़ार भी किया। फ़रमाया- अच्छा भला बतलाओ कि "ऐली ऐली लिमा सबक़तानी" का क्या अभिप्राय: है? अबी अबी करके क्यूँ न पुकारा? इबरानी भाषा में ऐल ख़ुदा को कहते हैं। इसका यही अर्थ हुआ कि दया कर तथा कृपा कर तथा मुझे अपनी सहायता से वंचित तथा साधन हीन न छोड़, अर्थात मेरी रक्षा कर।

हदीस में आता है कि इंसान ख़ुदा की ओर एक बालिश्त भर जाता है तो ख़ुदा उसकी ओर हाथ भी आता है, यदि इंसान चल कर आता है तो ख़ुदा तआला दौड़ कर आता है, अर्थात यदि इंसान ख़ुदा का ध्यान करे तो अल्लाह तआला भी रहमत, कृपा तथा मग़फ़िरत में अत्यधिक स्तर का उस पर फ़ज़ल करता है। परन्तु यदि ख़ुदा से मुंह फेर कर बैठ जावे तो ख़ुदा तआला को क्या चिंता। क़ुर्आन शरीफ़ ने अल्लाह तआला के दो नाम पेश किए हैं- الحّی اور القیّوم अलहय्यो का अर्थ है जीवित ख़ुदा तथा दूसरों को जीवन देने वाला तथा अलक़य्यूम का अर्थ है स्वयं स्थापित तथा दूसरों को क़ायम रखने वाला। हर एक चीज़ का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष क़याम तथा जीवन इन्हीं दोनों गुणों के कारण है। अत: ह्यी का शब्द चाहता है कि

उसकी बन्दगी की जाए जैसा कि इसकी अभिव्यक्ति सूर: फ़ातिह: में إِيَّاكَ نَعْبُدُ से है और अलक़य्यूम चाहता है कि उससे सहारा मांगा जाए, इसको إِيَّاكَ نَسْتَعِينُ के शब्द से अदा किया गया है। मानव को ख़ुदा की आवश्यकता हर अवस्था में रहती है इस लिए अनिवार्य हुआ कि ख़ुदा तआला से शक्ति मांगते रहें तथा यही मूल इस्तिग़फ़ार है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि सद्कर्म तथा इबादत में पूरी रूचि एवं लीनता अपनी तरफ़ से नहीं हो सकती, यह ख़ुदा तआला की कृपा एवं तौफ़ीक़ से मिलती है। इसके लिए आवश्यक है कि इंसान घबराए नहीं तथा ख़ुदा तआला से उसकी तौफ़ीक़ और फ़ज़ल के लिए दुआएँ करता रहे। इबादत में रूचि एवं लीनता भी अल्लाह तआला से मांगे और इन दुआओं में थक न जाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि खूब याद रखो कि अल्लाह तआला को छोड़ कर दवा एवं उपाय पर भरोसा करना मूर्खता है। अपने जीवन में ऐसा बदलाव पैदा कर लो कि मालूम हो कि मानो नया जीवन इस्तिग़फ़ार के द्वारा मिला है। इस्तिग़फ़ार को बढ़ाओ, जिन लोगों को सांसारिक व्यस्तता के कारण कम समय मिलता है उनको सर्वाधिक डरना चाहिए। नौकरी करने वाले लोगों से प्राय: अल्लाह के कर्तव्य छूट जाते हैं इसलिए मजबूरी की अवस्था में ज़ोहर व असर तथा मग़रिब व इशा की नमाज़ों का जमा करके पढ़ लेना वैध है, अधिक मजबूरी है तो पढ़ लो जमा करके परन्तु असल बात यही है कि अपने समय पर अदा की जाएँ नमाज़ें। अल्लाह तथा उसके बन्दों के अधिकारों में अत्याचार एवं अनर्थ न करो, अपने उत्तरदायित्वों को अति ईमानदारी के साथ अदा करो।

अतएव इस्तिग़फ़ार एवं तौबा का तभी लाभ है जब मूल आदेशों को भी सामने रख कर सम्पूर्ण आज्ञा पालन किया जावे, नमाज़ों को अदा करने में नियमबद्धता हो, अल्लाह और बन्दों के हक़ की पूरी अदायगी हो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यह मत कहो कि तौबा स्वीकार नहीं होती। याद रखो कि तुम अपने कर्मों के परिणाम से कभी बच नहीं सकते, सदैव फ़ज़ल बचाता है न कि कर्म। फिर फ़रमाया- ऐ ख़ुदाए करीम व रहीम! हम सब पर कृपा कर कि हम तेरे बन्दे हैं तथा तेरे आसताने पर गिरे हैं। अल्लाह तआला हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआ का वारिस बनाए तथा हम तौबा एवं इस्तिग़फ़ार के वास्तविक अर्थ को समझते हुए इस्तिग़फ़ार के यथार्थ को समझते हुए इस्तिग़फ़ार व तौबा करने वाले हों।

ख़ुत्ब: जुम्अ: के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने चार मृतकों तथा उनकी जमाअती सेवाओं का वर्णन फ़रमाया और नमाज़ के बाद उन मृतकों के जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131

☆ ☆ ☆

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब अलैहिस्सलाम का मक़ाम और मर्तबा
(पद और गरिमा,)

(लेखक : हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह अन्हु) **अनुवादक:** फरहत अहमद आचार्य

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम हमारे प्यारे आका सरवर-ए-कायनात ख़ातमुल अंबिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्पूर्ण अनुयायी, सच्चे ग़ुलाम और आध्यात्मिक पुत्र हैं जिनको अल्लाह तआला ने इस ज़माने में मानव जाति के सुधार और मार्गदर्शन के लिए मसीह मौऊद और अन्तिम ज़माने का इमाम बनाकर भेजा। चौदहवीं शताब्दी हिज्री के आरम्भ में भारत बल्कि सारे संसार में मुसलमानों की हालत बहुत ही कमज़ोर थी। मुसलमान केवल नाम के थे। उनकी ईमानी और व्यावहारिक कमज़ोरियों को देखकर ईसाई और अन्य धर्मों वाले इस्लाम पर हमले कर रहे थे। मुसलमानों में जवाब देने की हिम्मत न थी। इस्लाम का दर्द रखने वालों के दिल परेशान थे और ख़ुदा तआला के सामने सज्दे में थे। अंतत: अल्लाह तआला की रहमत जोश में आई और ख़ुदा तआला ने अपने वचन के अनुसार इस्लाम की रक्षा और नवजागरण की नींव डाली।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम का स्थान, मुजद्दिद-ए-आज़म

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को एक कश्फ़ (दिव्य स्वप्न) में यह दृश्य दिखाया गया कि एक उद्यान लगाया जा रहा है और आपको इसका माली नियुक्त किया गया है। इसी प्रकार सन् 1882 ई. के आरम्भ में अल्लाह तआला ने आपको इल्हाम किया: قُلْ اِنِّیْ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِیْنَ

(पुस्तक किताबुल बरिय्या, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 13 पृष्ठ 201 हाशिया)

कि तू कह दे कि मैं अल्लाह की ओर से मामूर और पहला मोमिन हूँ।

यह आपकी मामूरियत और मुजद्दिदीयत का पहला इल्हाम है और यह वह स्थान है जिस पर अल्लाह तआला ने आपको सबसे पहले नियुक्त किया।

पवित्र क़ुर्आन, हदीसों और इस्लाम के बुज़ुर्गों के उपदेशों के प्रकाश में जब हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्थान पर विचार करते हैं, तो पता चलता है कि अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुर्आन में जहां इस्लाम के सम्पूर्ण होने की घोषणा की है वहाँ इस्लामी शिक्षाओं अर्थात पवित्र क़ुर्आन की सुरक्षा का वादा किया है जैसा कि कहा: اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّکْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ

(सूर: अल हिज्र आयत नम्बर 10)

अर्थात निश्चित रूप से हम ने ही यह ज़िक्र उतारा है और निस्सन्देह हम ही इसकी रक्षा करने वाले हैं। अत: ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन की ज़ाहिरी सुरक्षा के साथ-साथ भीतरी सुरक्षा की भी व्यवस्था की है और वह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत में मुजद्दिदीन का पैदा करना और उन्हें

अपने पवित्र इल्हाम से लाभान्वित करना है और धर्म के संस्कार का कार्य उनके सुपुर्द करना है। अत: रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को शुभ सन्देश देते हुए कहते हैं: إِنَّ اللهَ يَبْعَثُ لِهٰذِهِ الْأُمَّةِ عَلٰى رَأْسِ كُلِّ مِئَةٍ مَنْ يُّجَدِّدُ لَهَا دِيْنَهَا (सुनन अबी दाऊद किताबुल मलाहिम)

अर्थात अल्लाह तआला प्रत्येक शताब्दी के सिर पर ऐसे लोग भेजता रहेगा जो उस शताब्दी की ज़रूरतों के अनुसार धर्म के सुधार का कार्य करेंगे। जहां तक मुजद्दिदीन के आगमन के संबंध में इस्लाम के बुजुर्गों के रोया (दिव्य स्वप्नों) तथा कश्फ़ एवं उपदेशों से स्पष्ट होता है कि वह विश्वास रखते थे कि चौदहवीं सदी के सिर पर आने वाले मुजद्दिद मसीह मौऊद और इमाम महदी अलैहिस्सलाम होंगे।

इसलिए नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ान साहिब भोपालवी ने अपनी पुस्तक हिजजुल किरामह में तेरह शताब्दियों के मुजद्दिदीन की सूचि देकर लिखा है कि (फारसी पंक्ति जिसका अनुवाद इस प्रकार है)

"चौदहवीं सदी शुरू होने में दस वर्ष शेष हैं यदि इसमें महदी और ईसा का आगमन हो तो वही चौदहवीं सदी के मुजद्दिद और मुजतहिद होंगे।" (हिजजुल किरामह पृष्ठ 139 प्रकाशित 1391 हिजरी)

यह वही समय है जब आप अलैहिस्सलाम ने इस्लाम के समर्थन में अपने लेख और पुस्तकों के प्रकाशन से इस्लामी जगत में एक नया जीवन पैदा किया और मुसलमानों के निराश चेहरों पर रोनकें दिखने लगीं। आपकी इन रचनाओं को तेरह सौ वर्षों में इस्लाम की सर्वश्रेष्ठ सेवा घोषित किया गया। आप इस्लाम दुश्मन शक्तियों के विरुद्ध इस शान से खड़े हुए कि आध्यात्मिक दृष्टि रखने वालों ने आपके स्थान और दर्जे को अच्छी तरह से पहचान लिया। लुधियाना के प्रसिद्ध बुज़ुर्ग हज़रत सूफी अहमद जान साहिब ने अपने एक शे'र में कहा:

हम मरीज़ों की है तुम्हीं पे नज़र
तुम मसीहा बनो ख़ुदा के लिए

लोगों के हाथ बैअत के लिये आपकी ओर उठने लगे लेकिन आपने ऐसे प्रत्येक आवेदन के उत्तर में यही कहा, "अब तक अल्लाह तआला की ओर से कुछ पता नहीं इसलिए दिखावे के मार्ग में कदम रखना उचित नहीं। (तारीख़ अहमदियत भाग प्रथम पृष्ठ 335)

समय गुज़रता गया और अन्तत: वह मुबारक घड़ी आ गई जब आपको अल्लाह तआला की ओर से इस बात की अनुमति प्राप्त हुई कि लोगों से बैअत लें। प्रथम दिसंबर 1888 ई. को आपने एक विज्ञापन "तबलीग" के नाम से प्रकाशित किया जिसमें पहली बार अल्लाह तआला के इल्हाम के हवाले से घोषणा की कि ख़ुदा तआला ने बैअत लेने का आदेश दिया है। इस प्रारंभिक घोषणा के लगभग चालीस दिन बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 12 जनवरी 1889 ई. को "तक्मील-ए-तब्लीग़" के नाम से एक और विज्ञापन प्रकाशित किया जिसमें बैअत की दस शर्तों का उल्लेख किया। अन्तत: 23 मार्च 1889 ई. का दिन आ गया जो इस्लाम के इतिहास में एक सुनहरा ऐतिहासिक दिवस है। उस दिन जमाअत के इतिहास में पहली बार अल्लाह तआला के आदेश के अनुपालन में और नबी की सुन्नत का पालन करते हुए, ज़माने के इमाम सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपना पवित्र हाथ बैअत करने वालों के हाथों के

ऊपर रखते हुए उनसे बैअत ली।

सय्यदना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने स्थान और दर्जे का उल्लेख करते हुए कहते हैं :

"मुझे ख़ुदा की पवित्र और शुद्ध वह्यी से सूचना दी गई है क मैं उसकी ओर से मसीह मौऊद व महदी मा'हूद और आंतरिक तथा बाहरी मतभेदों का निर्णय करने वाला हूँ। यह जो मेरा नाम मसीह और महदी रखा गया है इन दोनों नामों से (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने मुझे लाभान्वित किया और फिर खुदा ने अपने सीधे संवाद से यही मेरा नाम रखा और फिर ज़माने की वर्तमान अवस्था ने मांग की कि यही मेरा नाम हो।" (अरबईन भाग प्रथम, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 17 पृष्ठ 345)

यह बात भी उल्लेखनीय है कि सय्यदना हज़रत अक़दस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम को जो भी दर्जे अल्लाह तआला द्वारा प्रदान किए गए हैं वे सभी के सभी दर्जे हज़रत ख़ातमुल अंबिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुपालन और आज्ञाकारिता और आपसे सम्पूर्ण प्रेम और आप की पूर्ण ग़ुलामी के परिणामस्वरूप आप अलैहिस्सलाम को प्राप्त हुए हैं अत: आप एक स्थान पर कहते हैं :

"अत: मैंने तो केवल ख़ुदा की कृपा से न कि अपने किसी कौशल से इस ने'मत से भाग पाया जो मुझसे पहले नबियों और रसूलों और ख़ुदा के प्रिय लोगों को दी गई थी और मेरे लिए इस ने'मत का पाना संभव नहीं था यदि मैं अपने सैयद व मौला फ़ख़रुल अंबिया और ख़ैरुल वरा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की राहों का अनुकरण न करता। अत: मैंने जो कुछ पाया इस अनुकरण से पाया ।

हक़ीक़तुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 22 पृष्ठ 64)

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम का स्थान (मक़ाम व मर्तबा), मसील मसीह (मसीह कस प्रतिरूप)

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने इस बात को अच्छे प्रकार से परिभाषित किया कि इस्लाम अल्लाह तआला का अंतिम धर्म, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुन्नबिय्यीन और पवित्र क़ुर्आन अंतिम शरीअत (खुदा का विधान) है और इसमें कदापि किसी परिवर्तन की गुंजाइश नहीं। मसीह और महदी का उद्देश्य तो वास्तव में मुसलमानों को इस्लाम पर पुन: स्थापित करना और ईमान को दिलों में जीवित करना है।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पवित्र क़ुर्आन, हदीसों और उम्मत के बुज़ुर्गों के उद्धरणों से यह प्रमाणित किया कि बनी इस्राईल की ओर आने वाले हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आकाश पर जीवित मौजूद नहीं बल्कि मृत्यु पा चुके हैं और उम्मत मुहम्मदिया में आने वाले मामूर को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से कई समानताओं के कारण दृष्टान्त में मसीह का उपनाम दिया गया है जैसे कि किसी बड़े उदार को हातिम ताई कहते हैं।

पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला ने हज़रत रसूले अक़रम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का संरूप करार दिया है जैसा कि कहा

اِنَّآ اَرۡسَلۡنَآ اِلَيۡكُمۡ رَسُوۡلًا شَاهِدًا عَلَيۡكُمۡ كَمَآ اَرۡسَلۡنَآ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ رَسُوۡلًا ؕ (अलमुज़म्मिल 16)

निश्चित रूप से हमने तुम्हारी ओर एक रसूल भेजा है कि तुम पर निगरान है जैसा कि हमने फिरऔन की ओर भी एक रसूल भेजा था।

इसी प्रकार पवित्र क़ुर्आन के एक और स्थान पर अल्लाह तआला फ़र्माता है:

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡكُمۡ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسۡتَخۡلِفَنَّهُمۡ فِى الۡاَرۡضِ كَمَا اسۡتَخۡلَفَ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ (सूरः अलनूर 56)

अल्लाह तआला ने तुम में से ईमान लाने वालों और उचित कर्म करने वालों से वादा किया है कि वह उन्हें ज़मीन में खलीफ़ा बना देगा जिस प्रकार उनसे पहले लोगों को ख़लीफ़ा बना दिया था।

इस आयत से यह स्पष्ट होता है कि उम्मत मुहम्मदिया उम्मत मूसविया के समान है।

उम्मत-ए-मुसविया और उम्मत-ए-मुहम्मदिया की पूर्ण समानता में से एक भव्य भाग यह भी है कि जिस प्रकार हज़रत मूसा के बाद पुरस्कार स्वरूप अल्लाह तआला ने ज़ाहिरी ख़लीफ़ा तथा आंतरिक ख़लीफ़ों का एक लंबा क्रम चौदह सौ वर्षों तक जारी रखा और उसका अंत हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर हुआ, उसी प्रकार उम्मत-ए-मुहम्मदिया में भी चौदहवीं शताब्दी में मसीह मौऊद का आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़लीफ़ा बन कर प्रकट होना निश्चित था और वह उम्मत-ए-मुहम्मदिया में प्रकट होंगे तो वह अल्लाह की किताब और रसूल की सुन्नत के अनुसार ही फैसला करेंगे अर्थात् वह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा होंगे।

इसलिए नबी अकरम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने उम्मत मुहम्मदिया के ख़ातमुल ख़ुलफ़ा अर्थात् मसीह मौऊद की भविष्यवाणी करते हुए कहा :

كَيۡفَ اَنۡتُمۡ اِذَا نَزَلَ ابۡنُ مَرۡيَمَ فِيۡكُمۡ وَاِمَامُكُمۡ مِنۡكُمۡ

(बुखारी, अध्याय नुज़ूल ईसा इब्ने मरयम)

हे मुसलमानो! तुम कितने भाग्यशाली होगे उस समय जब तुम में मर्यम का पुत्र अवतरित होगा और वह तुम में से तुम्हारा इमाम होगा।

हदीसों में जहां मरियम के पुत्र ईसा के आगमन का वर्णन मिलता है वहाँ शब्द 'नुज़ूल' प्रयोग हुआ है जिससे कुछ लोगों ने यह समझा है कि शायद वह आसमान में जीवित हैं और अंतिम समय में आसमान से उनका अवतरण होगा।

हालांकि हदीस के शब्द इमामुकुम मिनकुम ने स्पष्ट कर दिया है कि वह उम्मत-ए-मुहम्मदिया का ही एक व्यक्ति होगा। इसी कारण इस्लाम के बुज़ुर्गों का हम सब पर बहुत बड़ा एहसान है जो उन्होंने इस समस्या को हमें ख़ूब स्पष्ट कर दिया है।

इमाम सिराजुद्दीन इब्नुल वरदी अपनी पुस्तक "खरीदतुल अजाइब और फ़रीदतुल् गराइब" पृष्ठ 214

पर लिखते हैं :

وَقَالَتْ فِرْقَةٌ مِنْ نُزُوْلِ عِيْسٰى خُرُوْجُ رَجُلٍ يُشْبِهُ عِيْسٰى فِي الْفَضْلِ وَالشَّرْفِ كَمَا يُقَالُ لِلرَّجُلِ الْخَيِّرِ مَلَكٌ وَلِلشِّرِّيْرِ شَيْطَانٌ تَشْبِيْهًا بِهِمَا وَلَا يُرَادُ الْاَعْيَان

अर्थात एक समूह ने कहा कि ईसा के नुज़ूल से एक ऐसे व्यक्ति का आगमन अभिप्राय है जो कृपा और सम्मान में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जैसा हो। जैसा कि एक अच्छे आदमी को फ़रिश्ता और बुरे आदमी को शैतान कह देता हैं परन्तु उनसे फ़रिश्ते और शैतान की हस्ती अभिप्राय नहीं होती।

इसी प्रकार हज़रत शेख़ मुहियुद्दीन इब्ने अरबी कहते हैं :

وَجَبَ نُزُوْلُهٗ فِيْ آخِرِ الزَّمَانِ بِتَعَلُّقِهٖ بِبَدَنٍ آخَر

(तफ़्सीर अराइसुल बयान भाग 1 पृष्ठ 262)

अर्थात अनिवार्य है कि अंतिम समय में मसीह ईसा इब्ने मर्यम का नुज़ूल किसी अन्य शरीर के साथ हो।

और चूंकि मसीह मौऊद का मिशन हदीसों की दृष्टि से सलीब को तोड़ना है अर्थात् सलीबी और ईसाई विचारधाराओं को समाप्त करना है अत: अल्लाह तआला ने आने वाले मसीह मौऊद को "मसील-ए-मसीह" (मसीह जैसा) के स्थान पर नियुक्त किया और अल्लाह तआला ने इल्हाम द्वारा आपको यह बताया कि جَعَلْنَاكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَم (इज़ाला औहाम, रूहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 409)

कि हम ने तुम्हें मसीह इब्ने मर्यम बना दिया है।

इसलिए पवित्र क़ुर्आन मजीद, हदीसों और इस्लाम के बुज़ुर्गों की बातों से स्पष्ट है कि जिस मसीह अलैहिस्सलाम के आने की भविष्यवाणी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माई वह बनी इस्राईल की ओर आने वाले हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम नहीं हैं अपितु उम्मत-ए-मुहम्मदिया के ही एक व्यक्ति हैं और हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम हैं।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम का स्थान, महदी

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद ने यह सिद्ध किया कि मसीह और महदी दो अलग अस्तित्व नहीं है जैसा कि आमतौर पर मुसलमानों का विश्वास है, अपितु यह एक ही अस्तित्व के दो नाम हैं। क्योंकि हदीसों में जो कार्य मसीह मौऊद का बताया गया है लगभग वही कार्य महदी का बताया गया है। यह इस बात की दलील है कि मसीह और महदी एक ही अस्तित्व हैं और मसीह और महदी के जो लक्षण पवित्र क़ुर्आन में इंगित किए गए हैं और हदीसों में विस्तार के साथ वर्णन हुए हैं और उम्मत के बुज़ुर्गों को ख़ुदा तआला ने बताया वे सब हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम के समय और आपके व्यक्तित्व में पूरे हो रहे हैं।

इब्ने माजा अध्याय शिद्दतुज़्ज़मान की हदीस है कि मुहम्मद बिन खालिद अलजुंदी से रिवायत है कि

لَا الْمَهْدِيُّ اِلَّا عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ

कि ईसा मरियम के अतिरिक्त और कोई महदी नहीं। इसी प्रकार अहमद बिन हंबल भाग 2 पृष्ठ 411 में यह हदीस है-

يُوْشِكُ مَنْ عَاشَ مِنْكُمْ اَنْ يَلْقٰى عِيْسَى بْنُ مَرْيَمَ اِمَا مًا مَهْدِيًّا

अर्थात् आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम में से जो जीवित रहेगा निकट है कि वह ईसा से मुलाक़ात करे इस अवस्था में कि वह इमाम महदी होंगे।

इस हदीस से स्पष्ट है कि हज़रत मसीह तथा महदी एक ही हैं और यह महदी तथा मसीह एक ही व्यक्ति के दो अलग अलग गुण हैं।

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम का स्थान, उम्मती नबी

अल्लाह तआला ने उम्मत-ए-मुहम्मदिया को "ख़ैरे उम्मत" (सबसे अच्छी उम्मत) कहा है और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बरकतों और आपके आध्यात्मिक प्रभाव से उम्मत मुहम्मदिया क़यामत तक लाभ उठाती रहेगी। अत: पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्ण आज्ञाकारिता के परिणामस्वरूप उम्मते मुहम्मदिया में नबुव्वत के पुरस्कार को जारी रखने का वादा है। जैसा कि कहा:

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ۝٦٩

(अन्निसा : 70)

और जो भी अल्लाह का और इस रसूल का आज्ञापालन करे तो यही वे लोग हैं, जो उन लोगों के साथ होंगे जिन को अल्लाह ने पुरस्कृत किया है (अर्थात्) नबियों में से, सिद्दीक़ों (सत्यानिष्ठों) में से, शहीदों में से और सालेहीन (सदाचारियों) में से। और ये बहुत ही अच्छे साथी हैं।

इस आयत में उम्मते मुहम्मदिया में जहां सिद्दीक़, शहीद और सालेह के स्थान और दर्जे के मिलने का उल्लेख है वहाँ नुबुव्वत का महान स्थान मिलने का भी स्पष्ट उल्लेख है।

और इन पुरस्कारों की प्राप्ति के लिए उम्मत को अल्लाह तआला ने यह दुआ भी सिखाई और नमाज़ में पांचों समय निरन्तरता के साथ इस दुआ को पढ़ने का आदेश दिया और वह दुआ यह है कि

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ

हे हमारे रब्ब! हमें सीधे मार्ग पर चला उन लोगों के मार्ग पर जिन को तूने पुरस्कृत किया. (सूर: अलफ़ातिहा: आयत 6,7)

मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आने वाले मौऊद और ईसा को चार बार 'नबी उल्लाह' के नाम से उल्लेख किया है। (मुस्लिम, किताबुल फ़ित्न)

और बुखारी शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया :

كَيْفَ اَنْتُمْ اِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فِيْكُمْ وَاِمَا مُكُمْ مِنْكُم

तुम कितने भाग्यशाली होगे जब मर्यम का पुत्र तुम में अवतरित होगा और वह तुम में से तुम्हारा इमाम होगा। अत: यह बात स्पष्ट हो गई कि हदीस के अनुसार यह इमाम बाहर से नहीं आएगा बल्कि उम्मते

मुहम्मदिया का ही एक व्यक्ति होगा। यहां पर इस बात की व्याख्या आवश्यक है कि ग़ैर अहमदी मित्र ख़ातमुन्नबिय्यीन का यह अर्थ करते हैं कि हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अंतिम नबी हैं और आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के बाद कोई नबी नहीं आ सकता। हालांकि उपरोक्त आयत व हदीस में उम्मते मुहम्मदिया में नबुव्वत का पुरस्कार दिए जाने का उल्लेख है। जमाअत अहमदिया ख़ातमुन्नबिय्यीन की यह व्याख्या करती है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नबुव्वत के समस्त कमाल समाप्त हो गए हैं और अब आपसे बढ़कर कोई नबी नहीं आ सकता है और न ही आपसे अलग होकर कोई नबुव्वत का दर्जा प्राप्त कर सकता है। अब नबुव्वत का पुरस्कार अल्लाह तआला के आदेशानुसार अल्लाह तआला और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आज्ञापालन के साथ जुड़ा है।

हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहो अन्हा कहती हैं:

قُوْلُوْا اِنَّهٗ خَاتَمُ الْاَنْبِيَاءِ وَلَا تَقُوْلُوْا لَا نَبِيَّ بَعْدَهٗ

तुम वास्तव में यह कहो कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुल अम्बिया हैं परन्तु यह न कहो कि आपके बाद कोई नबी नहीं। (मजमअुल बिहार भाग 4 पृष्ठ 80)

इसी तरह उम्मत के बुज़ुर्गों में से हज़रत मुहियुद्दीन इब्ने अरबी रहमहुल्लाह तआला अपनी पुस्तक फ़ुतूहात-ए-मक्किया में कहते हैं :

"वह नबुव्वत जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आने से टूटी हुई है वह केवल तश्रीही (शरीयत वाली) नबुव्वत है न कि नबुव्वत का दर्जा। अत: अब कोई नई शरीयत नहीं होगी जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शरीयत को निरस्त करे और आपकी शरीयत में कोई नया आदेश बढ़ाने वाली शरीयत हो।" (फ़ुतूहात-ए-मक्किया भाग 2 पृष्ठ 73)

और कहा فَاِنَّ النُّبُوَّةَ سَارِيَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ فِى الْخَلْقِ

अर्थात नबुव्वत सृष्टि में क़यामत तक जारी है। (फ़ुतूहात-ए-मक्किया भाग 2 पृष्ठ 73)

इसलिए सय्यदना हज़रत अक़दस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की क़सम खा कर यह दावा किया है कि :

"मैं उस ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ जिसके हाथ में मेरी जान है कि उसी ने मुझे भेजा है और उसी ने मेरा नाम नबी रखा और उसी ने मुझे मसीह मौऊद के नाम से पुकारा।"
(ततिम्मा हक़ीक़तुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 22 पृष्ठ 503)

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम का मक़ाम, नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्ण प्रतिच्छाया

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम केवल उम्मती नबी ही नहीं बल्कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्ण प्रतिछाया हैं। अल्लाह तआला सूर: जुमअ: में कहता है कि:

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ هُوَالَّذِىْ بَعَثَ فِى الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ

يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ وَّآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (अलजुअ: 2-4)

अनुवाद : जो आकाशों में है और धरती में अल्लाह ही का गुणगान करता है। वह सम्राट है, पवित्र है, पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है। वही है जिसने निरक्षर लोगों में उन्ही में से एक महान रसूल भेजा जो उन पर उसकी आयतों का पाठ करता है और उन्हें पवित्र करता है। और उन्हें पुस्तक की और विवेकशीलता की शिक्षा देता है जबकि इससे पूर्व वे निश्चित रूप से खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़े थे। और उन्हीं में से दूसरों की ओर भी (उसे भेजा है) जो अबी उनसे नहीं मिले। वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है।

जब आयत नाज़िल हुई तो सहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल वह कौन लोग होंगे जिनमें आप पुन: पधारेंगे। इस प्रश्न पर नबी अकरम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने मौन धारण किया। पुन: तीन बार प्रश्न होने पर आपने आपने उत्तर दिया। शायद आप अल्लाह की वह्यी की प्रतीक्षा में थे। आप ने हज़रत सलमान फ़ारसीरज़ि के कंधे पर हाथ रखकर कहा : لَوْ كَانَ الْاِ يْمَانُ عِنْدَالثُّرَيَّا لَنَا لَهُ رَجُلٌ اَوْ رِ جَالٌ مِنْ هٰؤُلَاءِ

अर्थात जब ईमान सुरैया सितारे तक उठ जाएगा तो फ़ारस वंशियों में से एक व्यक्ति या कई व्यक्ति ईमान को पुन: संसार में स्थापित करेंगे। (बुख़ारी किताबुत्तफ़सीर सूर: जुमअ:)

मानो कि आपने महदी को सलमान फ़ारसी की क़ौम में से बताया जो कि फ़ारस क़ौम के थे और नबी अकरम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने सहाबा के इस संदेह को दूर किया कि दूसरी बार आना मेरा नहीं होगा बल्कि जब ईमान इस दुनिया से उठ जाएगा तो फिर दुनिया में उसे स्थापित करने के लिए एक फ़ारस क़ौम का व्यक्ति आएगा जिसका आना वास्तव में मेरा आना होगा ।

बारहवीं शताब्दी के मुजद्दिद हज़रत शाह वलीउल्लाह साहिब मुहद्दिस देहलवी अपनी पुस्तक 'अलख़ैरुल कसीर' में आने वले मसीह के बारे में कहते हैं :

"उम्मते मुहम्मदिया में आने वाले मसीह का यह अधिकार है कि उसमें सैय्यदुल मुरसलीन आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रकाशों का परावर्तन हो। लोगों का मानना है कि मसीह जब पधारेंगे तो वह केवल एक उम्मती होंगे। ऐसा कदापि नहीं बल्कि वह मुहम्मदी नाम की पूरी व्याख्या होगा और उसी की दूसरी प्रति होगा। (अलख़ैरुल कसीर पृष्ठ 72)

तथा आप अपनी किताब हुज्जतुल् बालिग़ह में कहते हैं :

"शान में सबसे बड़ा नबी वह है जिसकी एक अन्य प्रकार की बे'सत (प्रादुर्भाव) भी होगी और वह इस प्रकार है कि अल्लाह तआला का दूसरी बे'सत से अभिप्राय है कि वह समस्त लोगों को अंधेरे से निकालकर प्रकाश की ओर लाने का कारण हो और उसकी क़ौम ख़ैर-ए-उम्मत हो जो समस्त लोगों के लिए निकाली गई हो। अत: इस नबी की पहली बे'सत दूसरी बे'सत को भी लिए हुए होगी।"

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब अलैहिस्सलाम का मक़ाम और मर्तबा पृष्ठ 1-12)

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE शेष.....

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kachegud
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H.O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

अरबईन नम्बर-2

संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमात, हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी की कलम से

अनुवादक : इब्नुल मेहदी लईक एम ए

उचित रहेगा कि इस दुआ के लिए सब लोग अपने हृदयों को साफ़ करके आएं, कोई अहंकार का जोश और क्रोध न हो तथा हार-जीत का मामला न समझें और न इस दुआ को मुबाहला ठहराएं, क्योंकि इस दुआ का लाभ-हानि सब मेरे अस्तित्व तक सीमित है, विरोधियों पर इस का कोई प्रभाव नहीं। हे बुज़ुर्गों ! स्पष्ट है कि भेद-भाव बहुत बढ़ गया है। इस भेद-भाव और आप लोगों के झूठा कहने के कारण इस्लाम कमज़ोर हो रहा है जबकि यह जमाअत हज़ारों की संख्या तक पहुंच गई है तथा मेरे प्रत्येक मुरीद को झुठलाया गया है। इस से फूट और भेद-भाव का अनुमान लगाया जा सकता है। ऐसे समय में इस्लामी प्रेम की यही मांग है कि अनावृष्टि के समय ख़दा से वर्षा के लिए पढ़ी जाने वाली नमाज़ (इस्तिस्क़ा) के लिए विनय और विनीतता के साथ जंगल में जाते हैं, उसी प्रकार इस समारोह में भी ऐसा ही दृश्य बनाएं तथा प्रयास करें कि बड़ी आर्द्रता और गिड़गिड़ा कर दुआएं हों। ख़ुदा निष्कपट लोगों की दुआओं को स्वीकार करता है। यदि यह जमात उसकी ओर से नहीं है और मनुष्य की ओर से बनाया झूठ और आडंबर है तो उम्मत की दुआ अति शीघ्र ख़ुदा तक पहुंचेगी, और यदि मेरा सिलसिला आकाशीय है और ख़ुदा के समर्थन और सहायता से चल रहा है तो मेरी दुआ सुनी जाएगी। अत: हे बुज़ुर्गों ! ख़ुदा के लिए इस बात को स्वीकार करो। अधिक लोगों की आवश्यकता नहीं। उलेमा में से चालीस लोग एकत्र हो जाएं, इस से कम भी नहीं चाहिए, चालीस की संख्या को दुआ की स्वीकारिता के लिए एक मुबारक पहुंच है। सांसारिक लोगोगं में से जो चाहे सम्मिलित हो जाए और दुआ विनयपूर्वक तथा रोकर की जाए। यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति को आने का कुछ कष्ट तो होगा और कुछ व्यय भी होगा परन्तु नितान्त आशा है कि ख़ुदा फ़ैसला कर देगा। हे बुज़ुर्गो! तथा क़ौम के शेख़ और उलेमा! मैं पुन: आपको अल्लाह तआला की शपथ देता हूँ कि इस विनती को अवश्य स्वीकार करें। हाँ यह बात भी उल्लेखनीय है कि चूंकि वर्षा ऋतु और गर्मी में यात्रा करना कष्ट से ख़ाली नहीं और मौसम की बीमारियां भी होती हैं। अत: इस समारोह के लिए 15, अक्टूबर 1900 ई.का मौसम अच्छा होगा उचित होगा। इस में कोई हानि नहीं कि हमारे विरोधियों की ओर से पीर महर अली शाह साहिब गोलड़वी या मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी या मौलवी अब्दुल जब्बार ग़ज़नवी इस प्रबंध के लिए ग्रुप के अमीर या बतौर सेक्रेटरी बन जाएं और परस्पर परामर्श के पश्चात् अनुमति का विज्ञापन दे दें, परन्तु ख़दा के लिए अब किसी अन्य शर्त से इस विज्ञापन को सुरक्षित रखें। मैंने मात्र ख़ुदा के लिए यह उपाय निकाला है और मेरा ख़ुदा साक्षी है कि मैंने केवल सत्य को प्रकट करने के लिए यह उपाय प्रस्तुत किया है इस में कोई भाग मुबाहले का नहीं। जो कुछ है मेरे प्राण और मेरे सम्मान पर है। ख़ुदा के लिए इसे अवश्य स्वीकार करें। देखिए उलेमा मेरे विरोध में कितने कष्ट में हैं। प्राय: मुझ पर वे आलोचनाएँ की जाती हैं जिनमें दूसरे नबी भी सम्मिलित होते हैं। नबियों ने

मज़दूरी भी की और नौकरियां भी कीं, काफ़िरों की वस्तुओं को उन्होंने प्रयोग भी किया, उन के खच्चरों पर सवार भी हुए जिन्हें वे दज्जाल कहते थे, उनकी भविष्यवाणियों के बारे में भी कुछ लोगों को परीक्षाओं से गुज़रना पड़ा कि उनके विचार के अनुसार वे पूरी न हुईं। जैसे यहूदी आज तक मसीह बादशाह के संबंध में जो भविष्यवाणी थी जो मसीह के आने से पूर्व एलिया के दोबारा आगमन की भविष्यवाणी थी। उन पर आपत्ति करते हैं। हज़रत इब्राहीम पर झूठ बोलने की आपत्ति की है और हज़रत मूसा पर छल से मिस्त्रियों के आभूषण लेना और झूठ बोलना, वचन-भंग करना तथा दूध पीते बच्चों का वध करना, अब तक आर्य आदि आपत्ति करते हैं तथा हुदैबिया की भविष्यवाणी जब कुछ अनाड़ी लोगों के विचार में पूरी न हुई। अत: कुछ तफ़्सीरों में लिखा है कि कई अज्ञान धर्म से विमुख हो गए तथा स्वयं नबी किसी समय अपनी भविष्यवाणी के अर्थ समझने में ग़लती कर सकता है। अत: हदीस **ذهب وهلى** इसकी साक्षी तथा यूनुस नबी का अज़ाब का वादा जिसकी अवधि निश्चित तौर पर चालीस दिन बताई गई थी टल जाना डराने वाली भविष्यवाणियों के संबंध में संयमी के लिए एक स्पष्ट निर्देश देता है जैसा कि विस्तार से दुर्रे मन्सूर और यूहन्ना नबी की किताब में है। फिर इन समस्त उदाहरणों के बावजूद मुझ पर आपत्ति करना क्या यह संयम का मार्ग है? स्वयं विचार कर लें। अब नीचे शेष इल्हामों का उल्लेख करता हूँ, क्योंकि दुआ के समय में जब यह पत्रिका हाथ में होगी तो उन इल्हामों का उल्लेख भी आवश्यक है और वे ये हैं: (ये इल्हाम बहुत सारे हैं जो अरबी भाषा में हैं इसलिए उनको नहीं लिखा है- संपादक)

अरबईन नम्बर-4

अरबईन नम्बर 3 में यद्यपि हम स्पष्ट तर्कों द्वारा उल्लेख कर चुके हैं कि अनादि काल से ख़ुदा का नियम यही है कि जो व्यक्ति ख़ुदा पर झूठ गढ़े वह नष्ट किया जाता है तथापि हम पुन: बुद्धिमानों को स्मरण कराते हैं कि सत्य यही है जो हमने वर्णन किया। होशियार! ऐसा न हो कि वे हमारे मुक़ाबले पर विरोधी मौलवी की बात मान कर विनाश का मार्ग धारण कर लें तथा अनिवार्य है कि क़ुर्आन करीम के तर्क को तिरस्कार पूर्वक देखने से ख़ुदा से डरें। स्पष्ट है कि अल्लाह तआला ने आयत **لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا** (अलहाक़्क़ह :45) को निरर्थक तौर पर नहीं फरमाया कि जिस से कोई प्रमाण स्थापित नहीं हो सकता। ख़ुदा तआला प्रत्येक निरर्थक कार्य से पवित्र है। अत: जिस स्थिति में उस नीतिवान ने इस आयत को तथा इसी प्रकार उस दूसरी आयत को जिसके शब्द ये हैं-

اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ★ (बनी इस्राईल-76)

प्रमाण के स्थान पर वर्णन किया है अत: इस से मानना पड़ता है कि यदि कोई व्यक्ति बतौर झूठ गढ़ने के नुबुव्वत अथवा ख़ुदा की ओर से आने का दावा करे तो वह आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के नुबुव्वत के युग के समान कदापि जीवन नहीं पाएगा अन्यथा यह प्रमाण किसी भी प्रकार

★ अर्थात् यदि यह नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) हमारे ऊपर कुछ झूठ बांधता तो हम उसको जीवन और मृत्यु से दो गुना अज़ाब चखाते। इससे अभिप्राय यह है कि अत्यन्त कठोर अज़ाब से तबाह करते। इसे से।

से उचित नहीं ठहरेगा तथा उसके समझने का कोई माध्यम स्थापित नहीं होगा; क्योंकि यदि ख़ुदा पर झूठ गढ़कर तथा ख़ुदा की ओर से मामूर होने का झूठा दावा करके तेईस वर्ष तक जीवन प्राप्त कर ले और तबाह न हो तो नि:सन्देह एक इन्कार करने वाले का अधिकार होगा कि वह यह आरोप प्रस्तुत करे कि जब उस झूठे ने जिसका झूठा होना स्वीकार करते हो, तेईस वर्ष तक या उससे अधिक समय तक जीवित रहा और तबाह न हुआ तो हम क्योंकर समझें कि ऐसे झूठे के समान तुम्हारा नबी नहीं था। एक झूठे को तेईस वर्ष तक छूट मिल जाना इस बात पर स्पष्ट प्रमाण है कि झूठे को ऐसी छूट मिल सकती है तो फिर لَوۡ تَقَوَّلَ عَلَيۡنَا की सच्चाई लोगों पर कैसे प्रकट होगी? तथा इस बात पर विश्वास करने के लिए कौन से प्रमाण होंगे कि यदि आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) झूठ गढ़ते तो तेईस वर्ष के अन्दर-अन्दर तबाह किए जाते, परन्तु यदि अन्य लोग झूठ गढ़ते तो वे तेईस वर्ष से अधिक समय तक भी जीवित रह सकते हैं और ख़ुदा उनको तबाह नहीं करता। यह तो वही उदाहरण है जैसे एक दुकानदार कहे कि यदि मैं अपने दुकान के व्यवसाय में कुछ बेईमानी करूँ या रद्दी वस्तुएं दूं या झूठ बोलूं या कम तोलूं तो उसी समय मुझ पर बिजली गिरेगी इसलिए तुम लोग मेरे बारे में बिल्कुल सन्तुष्ट रहो और कुछ संदेह न करो कि मैं कभी कोई रद्दी वस्तु दूंगा या कम तोलूंगा या झूठ बोलूंगा अपितु आँख बन्द करके मेरी दुकान से सौदा लिया करो तथा कुछ जांच-पड़ताल न करो। तो क्या इस व्यर्थ कथन से लोग सन्तुष्ट हो जाएंगे और उसके इस निरर्थक कथन को उसकी सच्चाई पर एक प्रमाण समझ लेंगे? कदापि नहीं। 'ख़ुदा की पनाह' ऐसा कथन उस व्यक्ति की सच्चाई का कदापि प्रमाण नहीं हो सकता बल्कि एक प्रकार से जनता को धोखा देना और उन्हें असावधान करना है। हाँ दो प्रकार से यह प्रमाण ठहर सकता है-(1) एक यह कि कुछ बार लोगों के समक्ष यह संयोग हो चुका हो कि उस व्यक्ति ने अपनी विक्रय वाली वस्तुओं के संबंध में कुछ झूठ बोला हो या कम तोला हो अथवा किसी अन्य प्रकार की बेईमानी की हो तो उसी समय उस पर बिजली गिरी हो और अधमरा कर दिया हो तथा यह घटना झूठ बोलने या बेईमानी करने अथवा कम तोलने की बार-बार पर बिजली गिरी हो, यहाँ तक कि लोगों के हृदयों ने विश्वास कर लिया हो कि वास्तव में बेईमानी और झूठ के समय उस व्यक्ति पर बिजली का प्रहार होता है तो उस अवस्था में यह कथन अवश्य बतौर प्रमाण प्रयोग होगा, क्योंकि बहुत से लोग इस बात के साक्षी हैं कि झूठ बोला और बिजली गिरी।

(2) दूसरे यह कि सामान्य लोगों के साथ यह घटना घटित हो कि जो व्यक्ति दुकानदार होकर अपनी विक्रय करने वाली वस्तुओं के संबंध में कुछ झूठ बोले या कम तोले अथवा अन्य किसी प्रकार की बेईमानी करे या रद्दी वस्तु बेचे तो उस पर बिजली गिरा करे। अत: इस उदाहरण को दृष्टिगत रख कर प्रत्येक न्यायकर्ता को कहना पड़ता है कि सर्वज्ञ और नीतिवान ख़ुदा के मुख से لَوۡ تَقَوَّلَ عَلَيۡنَا (अलहाक़्क़ह : 45) का शब्द निकलना, वह भी तभी एक ठोस तर्क का काम देगा जब दो में से एक रूप उस में पाया जाए।

(1) प्रथम तो यह कि 'ख़ुदा की शरण' आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने इस से पूर्व

कोई झूठ बोला हो और ख़ुदा ने कोई कठोर दण्ड दिया हो तथा लोगों को मौजूद और महसूस बातों के तौर पर मालूम हो कि आप यदि ख़ुदा पर झूठ बांधें तो आप को दण्ड मिलेगा जैसा कि पहले भी अमुक-अमुक अवसर पर दण्ड मिला, परन्तु इस प्रकार के प्रमाण को आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के संबंध में ऐसा विचार करना भी कुफ़्र है।

(2) दूसरे प्रमाण का रूप यह है कि ख़ुदा तआला का यह सामान्य नियम हो कि जो व्यक्ति उस पर झूठ बनाए उसे कोई लम्बी छूट न दी जाए और शीघ्र से शीघ्र तबाह किया जाए। अत: यहां यही प्रमाण उचित है अन्यथा لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا का वाक्य एक आपत्ति करने वाले व्यक्ति के निकट मात्र धोखा देना और 'ख़ुदा की शरण' एक अनर्थवादी दुकानदार के कथन के समान होगा। जो लोग ख़ुदा तआला के कलाम का सम्मान करते हैं उनकी अन्तरआत्मा इस बात को कदापि स्वीकार नहीं करेगी कि لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا का वाक्य ख़ुदा तआला की ओर से एक ऐसा अर्थहीन है जिसका कोई भी प्रमाण नहीं। स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला का उन विरोधियों को यह अप्रमाणित वाक्य सुनाना जो आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की नुबुव्वत को नहीं मानते और न क़ुर्आन करीम को ख़ुदा का, ख़ुदा की ओर से होना मानते हैं केवल व्यर्थ और बच्चों को बहलाने से भी कम है और स्पष्ट है कि इन्कारी और शत्रु उससे क्या और क्योंकर संतोष ग्रहण करेंगे अपितु उनके निकट तो यह केवल एक दावा होगा जिसके साथ कोई सबूत नहीं। ऐसा कहना कितना निरर्थक विचार है कि यदि मैं अमुक पाप करूँ तो मारा जाऊं यद्यपि करोड़ों अन्य लोग प्रतिदिन संसार में वही पाप करते हैं और मारे नहीं जाते। यह कैसा घृणित बहाना है कि दूसरे पापियों और झूठ घड़ने वालों को ख़ुदा कुछ नहीं कहता यह दण्ड विशेष तौर पर मेरे लिए है और सब से विचित्र यह कि ऐसा कहने वाला यह भी तो प्रमाण नहीं देता कि पिछले अनुभव से मुझे ज्ञात हुआ है और लोग देख चुके हैं कि इस पाप पर मुझे अवश्य दण्ड मिलता है। अत: ख़ुदा तआला के दार्शनिकतापूर्ण कलाम को जो संसार में समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए उतरा है। ऐसा व्यर्थ समझना ख़ुदा के पवित्र कलाम से उपहास करना है। क़ुर्आन करीम में सैकड़ों स्थानों पर इस बात को पाओगे कि ख़ुदा तआला ख़ुदा पर झूठ बांधने वालों को कदापि सुरक्षित नहीं छोड़ता। उसे इसी संसार में दण्ड देता है और तबाह करता है देखो अल्लाह तआला एक अवसर पर फ़रमाता है कि قَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى

(ताहा : 62) अर्थात् झूठ बांधने वाला असफल मरेगा और फिर दूसरे स्थान पर फ़रमाया-

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ (अलअन्आम-22)

उस व्यक्ति से अधिक अत्याचारी कौन है जो ख़ुदा पर झूठ बांधता है या ख़ुदा की आयतों को झुठलाता है। अब स्पष्ट है कि जिन लोगों ने ख़ुदा के नबियों के प्रादुर्भाव के समय ख़ुदा के कलाम को झुठलाया, ख़ुदा ने उन्हें जीवित नहीं छोड़ा और बड़े-बड़े अज़ाबों से तबाह कर दिया।देखो नूह की जाति तथा आद, समूद और लूत की क़ौम, फ़िरऔन और हमारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के मक्का वाले शत्रुओं का क्या परिणाम हुआ। अत: जब झुठलाने वाले इसी संसार में दण्ड पा चुके तो फिर जो व्यक्ति ख़ुदा पर झूठ बांधता है जिसका नाम इस आयत में प्रथम नम्बर पर वर्णन किया गया है वह क्योंकर

बच सकता है। क्या ख़ुदा का सच्चों और झूठों से एक समान व्यवहार हो सकता है और क्या झूठ बांधने वालों के लिए ख़ुदा की ओर से इस संसार में दण्ड नहीं مَا لَكُمْ قف كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ (अस्साफ़्फ़ात:155) फिर एक स्थान पर ख़ुदा तआला फ़रमाता है-

اِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ
بَعْضُ الَّذِىْ يَعِدُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِىْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ

(अलमोमिन-29)

अर्थात् यदि यह नबी झूठा है तो अपने झूठ से तबाह हो जाएगा और यदि सच्चा है तो अवश्य है कि कुछ अज़ाब तुम भी चखो क्योंकि अत्याचार करने वाले चाहे झूठ बांधें या झुठलाएं ख़ुदा से सहायता नहीं पाएंगे, अब देखो इस से अधिक व्याख्या क्या होती है कि ख़ुदा तआला क़ुर्आन करीम में बार-बार फ़रमाता है कि झूठ बांधने वाला इसी संसार में तबाह होगा अपितु ख़ुदा के सच्चे नबियों और उसके भेजे हुए लोगों के लिए सब से पहला प्रमाण यही हे कि वे अपने कार्य को पूर्ण करके मरते हैं और उनको धर्म प्रचार के लिए छूट दी जाती है। मनुष्य के इस संक्षिप्त जीवन में बड़ी से बड़ी छूट तेईस वर्ष है क्योंकि प्राय: नुबुव्वत का आरम्भ चालीस वर्ष पर होता है और तेईस वर्ष तक यदि अतिरिक्त आयु मिली तो मानों जीवन का उत्तम समय यही है। इसी कारण मैं बार-बार कहता हूँ कि सच्चों के लिए आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की नुबुव्वत का युग नितान्त उचित मापदण्ड है और कदापि संभव नहीं कि कोई व्यक्ति झूठा होकर और ख़ुदा पर झूठ बांधकर आंहज़रत की नुबुव्वत के युग के समान अर्थात् तेईस वर्ष तक छूट पा सके अवश्य मारा जाएगा। (... शेष)

★ ★ ★

Asifbhai Mansoori
9998926311

Sabbirbhai
9925900467

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's
CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover

E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457

FENLEYROSH

Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790

www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ○ (النحل 12)

Prop : Sk. Ishaque

Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653

FFT Fruits

FAIZAN FRUITS TRADERS

Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045

PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad

Mobile
09937238938

محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں

RUKSAR AGENCY

Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.

Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S

REHAN INTERNATIONAL

WE ARE ON

snapdeal
flipkart
amazon.com
Paytm

Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com

We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com

DECO
DL
LEATHERS

Genuine Quality

We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture

Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

अनुवादकः सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

प्रश्न- एक मुरब्बी साहिब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ज़हर देने वाली औरत के बारे में हुज़ूर ने अपने एक ख़ुतबा जुमा में फ़रमाया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे माफ़ कर दिया था जबकि एक हदीस में आता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे क़तल करवा दिया था, इस बारे में मज़ीद राहनुमाई की दरख़ास्त है। हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 20 फ़रवरी 2020 ई. में इस बारे में मज़ीद वज़ाहत करते हुए फ़रमाया :

उत्तर- इस मसला में उलमाए हदीस में भी इख़तेलाफ़ पाया जाता है। लेकिन ज़्यादा मुस्तनद और सिक़ा कुतुब अहादीस में वर्णन अहादीस के अनुसार यही मसलक दरुस्त है कि इस औरत के हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़तल की खुली खुली साज़िश करने के बावजूद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे माफ़ फ़र्मा दिया था। और बावजूद इसके कि इस ज़हर की काट आख़िरी उम्र तक आपके गले में महसूस होती रही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी ख़ातिर उस औरत को कोई सज़ा नहीं दी। जबकि दुनिया में ज़माना-ए-क़दीम में भी और आज के तरक़्क़ी याफता ज़माने में भी किसी बादशाह या सरबराह हुकूमत के क़तल की केवल मंसूबा बंदी पर मौत की सज़ाएं दी जाती हैं। कुछ मुहद्दिसीन ने इस मतभेद की वजह यह वर्णन की कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पहले इस औरत को कोई सज़ा नहीं दी थी लेकिन जब हज़रत बशर बिन बुरा रज़ियल्लाहु अन्हु की इस ज़हर आलूदा गोश्त के खाने से वफ़ात हो गई आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़िसास के तौर पर उस औरत को क़तल करवा दिया। अगर यह तौजीह दरुस्त भी हो तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जीवनी का यह पहलू जो हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वर्णन फ़रमाया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी ज़ात के लिए कभी किसी से इंतेक़ाम नहीं लिया, इस वाक़िया में भी बहुत नुमायां तौर पर सामने आता है।

प्रश्न : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा है कि बच्चे अक्सर प्रश्न करते हैं कि जब हम अपनी मर्ज़ी से पैदा नहीं हुए तो ख़ुदा तआला के अहकामात की पैरवी हम पर क्यों लाज़िम है? तथा लिखा कि दुआए क़नूत में जो यह फ़िक़रा है कि "हम छोड़ते हैं तेरे नाफ़रमान को'' तो क्या इस से मुराद नाफ़रमान औलाद और अफ़राद-ए- जमाअत भी हो सकते हैं? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 04 फ़रवरी 2020 में इन सवालात का निम्नलिखित जवाब अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर :अल्लाह तआला एक बच्चा को उसके वालदैन की ख़ाहिश के अनुसार पैदा करता है। फिर वालदैन को नसीहत करता है कि औलाद के नेक और सालेह होने के लिए दुआ करो और इस उद्देश्य के लिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में दुआ भी सिखाई है।

अल्लाह तआला ने इन्सान को अशरफ़-उल-मख़लूक़ात क़रार देकर उसे सोचने के लिए ज़हन और ज़िंदगी गुज़ारने के लिए विभिन्न योग्यताओं से नवाज़ा है। फिर उसे अच्छे और बुरे की पहचान करवा कर आज़ाद छोड़ दिया और उसे कहा कि अगर इस दुनिया की आरज़ी ज़िंदगी में अच्छे काम करोगे तो आख़िरत की दाइमी ज़िंदगी में अल्लाह तआला की तरफ़ से मिलने वाले मुख़्तलिफ़ किस्म के इनामात के वारिस क़रार पाओगे लेकिन अगर बुरे काम करोगे तो शैतान के क़ब्ज़े में चले जाओगे जिस की वजह से एक तो अलग अलग किस्म के इन इनामात से वंचित रहोगे और दूसरा शैतान के नक़्श-ए-क़दम पर चलने की वजह से जिन रुहानी बीमारियों का शिकार हो उनके ईलाज के लिए परलोक के जहन्नुम में जो कि वहां का हस्पताल है तरह-तरह की तकलीफ़ देने वाले इलाजों से गुज़ारना पड़ेगा।

क़ुरआन-ए-करीम ने अल्लाह तआला और शैतान के जिस मुकालमा को हमारे लिए वर्णन किया है इस में भी यही मज़मून है कि जब शैतान ने अल्लाह तआला से कहा कि मैं इन्सानों को तेरी राह से बहकाऊँगा तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मेरे बंदे तेरी बात हरगिज़ नहीं मानेंगे और मैं अपने उन बंदों को जन्नत जैसे इनामात से नवाज़ोंगा और जो तेरी बात मानेंगे तो मैं उनसे जहन्नुम को भरूँगा। अत: अब यह हर इन्सान का फ़र्ज़ है कि वे ख़ुद सोचे कि उसने अल्लाह तआला के अहकामात की पैरवी करके उस के इनामात का वारिस बनना है या शैतान की राह इख़तेयार करके जहन्नुम की सज़ाओं का हक़दार बनना है।

जहां तक दुआए क़नूत के फ़िक़रा का ताल्लुक़ है तो इस से मुराद वह फ़ासिक़-ओ-फ़ाजिर कुफ़्फ़ार हैं जिन्हों ने मुनाफ़क़त और धोखे के साथ मुस्लमानों का क़तल-ओ-ग़ारत किया और उन्हें तरह तरह के नुक़्सान पहुंचाए। इसलिए बैर-ए-मऊना और रजीव जैसे वाक़ियात के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दुआए क़नूत फ़रमाया। अत: माता पिता की नाफ़रमान औलाद या निज़ाम जमाअत से इंतेज़ामी सज़ा पाने वाले अफ़राद जमाअत इस से मुराद नहीं हो सकते। जबकि इंतेज़ामी सज़ा पाने वाले जमाअत के ऐसे लोग जिन पर इन सज़ाओं का बज़ाहिर कोई असर नहीं होता, उनकी झूठी अनाओं ने उन्हें अपने क़बज़े में लिया होता है और वे भूल जाते हैं कि निज़ाम जमाअत की इताअत करनी है। ऐसे लोगों को इस सज़ा का एहसास दिलाने के लिए जमाअत के बाकी लोगों का फ़र्ज़ बनता है कि उनके साथ मजलिसों में न बैठें, उन्हें अपनी दावतों में न बुलाएं और न उन्हें अपनी ख़ुशियों में शामिल करें। क्योंकि जमाअती सज़ा एक समाजी दबाव के लिए दी जाती है। जबकि बीवी बच्चों और वालिदैन को उनके साथ ताल्लुक़ात रखने की इसलिए इजाज़त दी जाती है कि वे उन्हें समझाएँ और निज़ाम जमाअत का फ़रमांबर्दार और स्वस्थ अंग बनाने की कोशिश करें।

प्रश्न : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से दरयाफ़त किया कि

क्या किसी की मौत का अंजाम उसके मज़हबी अक़ायद पर मुनहसिर है? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब दिनांक 04 फ़रवरी 2020 ई. में इस मसला के बारे में निम्नलिखित इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : अल्लाह तआला अम्बिया को इसलिए अवतरित करता है कि वे लोगों को नेकी की तरफ़ बुलाऐं और लोग इस दुनिया की आरिज़ी ज़िंदगी अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार गुज़ार कर उखरवी ज़िंदगी के दायमी इनामात के वारिस बनें और शैतानी रास्तों को तर्क कर के उखरवी अज़ाब से बचें। इसलिए अल्लाह तआला और उस के नबियों पर ईमान लाना ज़रूरी है। क़ुरआन-ए-करीम ने इस मज़मून को मुख़्तलिफ़ जगहों पर वर्णन फ़रमाया है।

लेकिन किसी के जन्नत या दोज़ख़ में जाने के फ़ैसला का इख़तेयार अल्लाह तआला के पास है। क्योंकि वह हर चीज़ का मालिक है। और वह फ़रमाता है कि मैं शिर्क के सिवा समस्त गुनाहों को माफ़ कर देता हूँ। अत: किसी आम इन्सान को इख़तेयार नहीं कि वह दूसरों के जन्नत या दोज़ख़ में जाने का फ़तवा दे। जबकि ख़ुदा के नबी और फ़िरिस्तादे चूँकि ख़ुदा से ग़ैब का इलम पाते हैं इसलिए जब कोई नबी या फ़िरिस्तादा किसी के बारे में कोई बात कहता है तो वह बात दरअसल ख़ुदा तआला के ही इलम पर मबनी और ऐन सदाक़त होती है। इसलिए हदीस में आता है हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास से एक जनाज़ा गुज़रा तो लोगों ने मरने वाले का ज़िक्र-ए-ख़ैर किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उसके लिए जन्नत वाजिब हो गई। फिर एक दूसरा जनाज़ा गुज़रा तो लोगों ने मरने वाले की बुराईयों का वर्णन किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उसके लिए जहन्नुम वाजिब हो गई। और फिर फ़रमाया कि मोमिन लोग ज़मीन पर अल्लाह तआला के गवाह हैं।

फिर यह बात भी याद रखनी चाहिए कि अल्लाह तआला रहीम-ओ-करीम है। वह किसी की छोटी से छोटी नेकी का भी बदला ज़रूर उसे देता है। इसलिए हदीस में आता है कि एक ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ की कि मैंने कुफ्र की हालत में महज़ ख़ुदा तआला के ख़ुश करने के लिए बहुत कुछ माल गरीबों को दिया था। क्या उस का सवाब भी मुझे मिलेगा? तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि वही सदक़ात हैं जो तुझे इस्लाम की तरफ़ खींच लाए हैं। अत: किसी की मौत पर उस के मज़हबी अक़ायद की बिना पर उसके लिए जन्नत या जहन्नुम का फ़ैसला करना किसी आम इन्सान के इख़तेयार में नहीं है। यह काम ख़ुदा तआला का है या उसकी नियाबत में उस के नबियों और फ़िरिस्तादा का है।

प्रश्न : एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में तहरीर किया कि जलसा सालाना जर्मनी में एक तक़रीर में दज्जाल को एक शख़्स की बजाय इस्तिआरे के तौर पर पेश किया गया था लेकिन पिछले दिनों एक वीडीयो में सही मुस्लिम की एक हदीस का

वर्णन था जिसमें दज्जाल को एक मुजस्सम इन्सान क़रार दिया गया है। क्या यह हदीस authentic है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब दिनांक 20 फ़रवरी 2020 में इस प्रश्न का निमंलिखित जवाब अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : दरअसल आख़िरी ज़माने में इस्लाम ने जिन मसायब और फ़ित्नों से दो-चार होना था, उनमें दज्जाल और याजूज माजूज का खासतौर पर वर्णन मिलता है। इसलिए क़ुरआन-ए-करीम में मुख़्तलिफ़ पैरायों में इन फ़ित्नों का वर्णन है और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में इन फ़ित्नों से अपनी उम्मत को आगाह फ़रमाया है, जिसका वर्णन कई अहादीस में वर्णन हुआ है। उन्ही में से एक हदीस सही मुस्लिम की भी है जिसका आपने वर्णन किया है। यह हदीस भी इस मज़मून से ताल्लुक़ रखने वाली दीगर अहादीस की तरह कशफ़ी नज़ारा और इसतिआरात पर मुश्तमिल है। अगर इस हदीस में वर्णित बातें हक़ीक़त पर मबनी होते तो इस रावी के अलावा भी कई और लोगों ने इस हदीस में वर्णित उस भारी-भरकम और देव-हैकल दज्जाल को ज़ाहिरी आँखों से देखा होता। अत: किसी और का इस हदीस में वर्णित इन विषयों के बारे में अपना ज़ाहिरी मुशाहिदा वर्णन न करना साबित करता है कि यह एक कशफ़ी नज़ारा था।

बाक़ी जहां तक दज्जाल और याजूज माजूज की हक़ीक़त का ताल्लुक़ है तो यह एक ही फ़ित्ने के मुख़्तलिफ़ मज़ाहिर हैं। दज्जाल इस फ़ित्ने के मज़हबी पहलू का नाम है। जिसका अर्थ है कि ये गिरोह आख़िरी ज़माने में लोगों के मज़हबी अक़ायद और मज़हबी ख़्यालात में फ़साद पैदा करेगा। और इस ज़माने में जो गिरोह सयासी हालात को ख़राब करेगा और सयासी अमन-ओ-अमान को तबाह-ओ-बर्बाद करेग़ा उसको याजूज माजूज का नाम दिया गया है। और हर दो से मुराद मग़रिबी ईसाई अक़्वाम की दुनयावी ताक़त और उनका मज़हबी पहलू है।

लेकिन इसके साथ अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के द्वारा हमें यह ख़बर दी कि जब दज्जाल और याजूज माजूज के फ़ित्ने बरपा होंगे और इस्लाम कमज़ोर हो जाएगा तो अल्लाह तआला इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिए मसीह मौऊद को मबऊस फ़रमाएगा। उस वक़्त मुस्लमानों के पास माद्दी ताक़त न होगी लेकिन मसीह मौऊद की जमाअत दुआओं और तब्लीग़ के साथ काम करती चली जाएगी। जिसकी बदौलत अल्लाह तआला इन फ़ित्नों को ख़ुद दूर कर देगा।

(ज़हीर अहमद ख़ान, मुरब्बी सिलसिला, इंचार्ज विभाग रिकार्ड दफ़्तर पी. ऐस लंदन)

शेष.....

★ ★ ★

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan

Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq Anwar-ul-Haq
Eajaz-ul-Haq Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

हमारे हृदय (दिल) के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी

- मनुष्य में रक्त परिसंचरण का प्रमुख अंग हृदय होता है, जो रेखित व अनैच्छिक पेशियों का बना हुआ होता है।
- हृदय वक्ष गुहा में पंसलियों के नीचे तथा फेंफड़ों के बीच स्थित होता है।
- हृदय का वजन पुरुषों में 300 ग्राम तथा महिलाओं में 250 ग्राम होता है।
- हृदय एक बार में 70 एम.एम. रक्त बाहर निकालता है जिसे स्टॉक रेट कहते हैं।
- हृदय व उसकी बीमारियों का अध्ययन विज्ञान की कॉर्डियोलॉजी शाखा में होता है।
- इस पर पाई जाने वाली झिल्ली हृदयावरण/पेरीकॉर्डियम कहलाती है, पेरीकॉर्डियम में पेराकॉर्डियल नामक द्रव्य भरा हुआ होता है जो हृदय को बाहरी आघातों से बचाता है।
- हृदय के दांये आलिन्द में तन्त्रिकाओं का गुच्छा होता है जिसे पेसमेकर कहते हैं। पेसमेकर "हृदय की धड़कन" को आरम्भ करता है तथा हृदय की धड़कन पर नियन्त्रण भी पेसमेकर ही करता है।
- पेसमेकर का प्रारम्भिक पेसमेकर एस.ए.नोड/शिरा आलिन्द नोड को कहते हैं।
- हृदय के दांये भाग का बांये भाग से कोई सम्बन्ध नहीं होता है, दांये भाग में अशुद्ध तथा बांये भाग में शुद्ध रक्त का प्रवाह होता है। ⁂ हृदय में शुद्ध रक्त फेंफड़ों द्वारा ऑक्सीजन मिलने के बाद होता है, रक्त ऑक्सीजन लोहित कोशिकाओं के माध्यम से लेता है।
- रक्त किडनी में छनता है, किडनी खराब होने की स्थिति में कृत्रिम रूप से रक्त छानने की प्रक्रिया डायलासिस कहलाती है।